शोध प्रविधि:
प्रस्तुत शोध कार्य सर्वक्षण विधि के माध्यम से सम्पादित किया गया। शोध उद्देश्यों की वांछित प्रतिपूर्ति हेतु मूल्यकलन, परीक्षण एवं अवलोकन आदि प्रविधियों का प्रयोग किया गया। विधि व प्रविधि अनुसंधान प्रक्रिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति के अनुसार निर्धारित होता है।
ऐतिहासिक विधि: इसका संबंध भूत काल से है तथा भविष्य को समझने के लिए भूत का वि” लेखन करती है।

महाभारत काल में नारी की प्रसिद्धि:
“क्रियाचर तथा मुदिशरक्रे स नृपस्ताम्।”
लड़कियों को अपने माता-पिता के गृह में नाना प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। यदापि न लड़कियों की शिक्षा संस्था में जाता हुआ नहीं देखा जाता था, फिर भी उनकी विद्या, ज्ञान, तर्कशक्ति, व्यवहारिक ज्ञान, राजनीतिक तथा अन्य शास्त्रों में उनका परिचय जगह-जगह प्रतिविष्मित होता है। उस काल में नारियों में शकुन्तला, सावित्री, शिवा, विदुला, गोतमी, आचार्या, अरुणधती, दयंती आदि जिज्ञानी भी
नारियों हैं और उनसे समवेत उपाध्याय हैं, उनसे यही प्रतिपादित होता है कि ये सभी विवृति थीं, इसोंने शर्त ज्ञान के साथ धर्म और राजनीति में विशेष दक्षता प्राप्त की थी। उनका चरित्र महान था। दोंपदी ने विधिवत् उपरुपस्त से राजनीति की शिक्षा ली थी, उसे जो विशेषता पंडिता, वित्तिता, धर्मज्ञा, धर्मदर्शनी आदि दिये गये थे, वे उनकी पाठ्यक्रम के धोतक हैं। दोंपदी ने महान राज्यवास्ता का सूत्र अपने हाथ में रखती थी। दास, दासियों पर नजर रखती थी। राजकोष के आय-व्यय का वह हिसाब रखती थी। उत्तरा ने भी गीत, नृत्य और वाचा की शिक्षा प्राप्त की थी।

महाराजी का ने भी नारी के विषय में कुछ ऐसे दृष्टिकोण किया है जो वास्तविकता से परे नहीं कहे जा सकते। यद्यपि महाराजी का विवादास्पद काल रहा है, लेकिन फिर भी भारतीय संस्कृति के समान महाराजी में भी सत्य का स्वतंत्रता योग्य नहीं माना गया है। महाराजी ने नारी की प्रशंसा में नारी को मनुष्य का श्रेष्ठतम संस्कृति, त्रिविंट की मूल तथा मित्र कहा है। इससे सभी ही साथ महाराजी ने निर्देशों के आदर को सर्वोपरि नाम ही नहीं कहा है कि निर्देशों के आदर-समान रूप में युक्त समाज में देखता निवास करते हैं। जहाँ इनका आदर नहीं होता है, वहीं सभी क्रियाएँ व्याख्या हो जाती हैं।

महाराजी ने निर्देशों की प्रशंसा के साथ-साथ खुलकर निदान भी की है। महाराजी ने कहा है कि नारियों को पुरुषों के समान से अधिक कोई वस्तु अच्छी नहीं लगती। निर्देशों का महाराजी ने स्वभाव से ही चलता बताया गया है।

भारतीय संस्कृति में नारियों की सामाजिक प्रतिष्ठा सदैव प्रशंसानीय रही है। संकटाल में नारी सदैव पुरुष की सहायता रही है। इस विषय में महाराजी ने नारियों के समान को वन पर्व में सूचना रूप में प्रस्तुत किया है। नारियों का समान कदाचित संसारस्वागत में बताते हुए उन्हें पुरुषी का आमूर्ति कहा गया है। कल्पना ने जार्जर्स्पिनों में सूचना और सुगमता आदि के शासन कोशल का वर्णन किया है। सूचना के विषय में जार्जर्स्पिनों में विस्तृत रूप में कहा गया है। भारतीय संस्कृति के नारी विषय समान को पाश्चात्य विद्वानों ने भी अधिक भावव व्यवस्था किया है।

"भर्तूरी विध्यतं तत्स्य भूर्जुवास्तथा। निषाकड़ेन नीलन नामुनयां प्रतिविभाजत।" का विश्वास महाराजी ने भारतीय संस्कृति में नारी के समान के विषय में सूचना रूप से है कि यह पूर्ण विश्वास के साथ दिखाया जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र में नारी इसनी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं हुई जितनी भारतदेश में।

भारतीय मानवीय ने नारी के रूप को पितास से अधिक पूर्णीय माना है। महान देहदाती होने के साथ-साथ नारी जानदाती भी है। वह ममता, क्रूड एवं दया की मूर्ति पीकर अकाद्य स्नेह प्रदर्शित करती है।
इसी कारण अथव्यवेद मे माता के अनुसूच मन वाला होने की प्रार्थना की गई है।१२ तैत्तिरियोपनिषद मे माता को देवता के समान माना गया है।१३ गोतम धर्म सूत्र मे माता को सर्वोत्तम गुरू माना गया है।१४ अतः समृद्धि मे कहा गया है कि माता से बढ़कर कोई गुरू नहीं है।१५ अर्थात् माता मनुष्यस्व भार्या श्रेणित: सखा।
भार्यमूल त्रिवर्गश्व भार्यामल तत्रिभाषतः।१५
भारतीय शास्त्रों मे कहा गया है कि माता मन, वाणी और कर्म से पति के आदेश का पालन करने वाली, सदा सारे की छाया की भौतिक पति को तहत क्षोभ देने वाली तथा पति हितकारिणी हुआ करती है।१७ महर्षि वाल्मीकि ने भार्यों को न केवल अध्यात्मिनी अपितु पति की अनन्त आलम बताया है।१८ आत्माध्यात्मिन्ता: पुरुषत्व दानः।
निर्देशः : समग्र रूप मे हम देखते हैं विभारी संस्कृति में चैतक काल से ही नारी को समाज में केवल पुरुष के समान विशिष्ट महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान है। भारतीय महोक्तियों के अनुसार नारी ही समाज की आधारशिला है जिसका आधार योकर समाज सम्बन्ध एवं समृद्धि पूर्ण हो पाता है।

संदर्भ ( References ) :
महाभारत अनुसार पर्व, 81/14 सृष्टि, 912
वेदी पर्व, 68/40
अनुसारण पर्व, 46/5
वही, 20/59
अत्र पर्व, 96/9
कथासित्सागर, 14/1/96
हिस्ट्री ऑफ हिंदुस्तान इन्स्टीट्यूट जिल्ड 2, पृष्ठ 51
हिन्दू परिवार निधि नामहास, पृष्ठ 163
जुरज, 1/24/46
अथवावेद, 3/30/2
तैत्तिरियोपनिषद, 1/11
गोतम धर्म सूत्र, 2/53
अत्र सृष्टि, 1/51
महाभारत आदि पर्व, 60/40-44
वही, 64/45
शुक्लीनीति, 4/13
वाल्मीकि सामायण